खोजत-खोजत

सतगुरु पाईये

श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी के अनमोल पुष्प

द्वितीय पुष्प

श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी

प्रकाशक :

श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान

Shri Prannath Global Consciousness Mission

संपर्क सूत्र :

श्री निजानन्द आश्रम

नेशनल हाईवे नं ८ बाईपास, सयाजीपुरा, वडोदरा **390019**

Email : premseva7@yahoo.com; manulpdc@yahoo.com
Phones: 989-800-0168, 787-415-1371, 942-736-4535

श्री निजानन्द आश्रम

रतनपुरी, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

Phone: 9811072951

Lord Prannath Divine Center, U.S.A/ Canada
914, 2nd Street, Macon, GA-31201
Email : jagni7@yahoo.com; jagnicorp@yahoo.com
Phones: 011-973-760-9238; 011-478-808-4079
Website: www.nijanand.org

श्री निजानन्द आश्रम, साढोली

पो. झबरेडा, जिल्ला. हरिद्वार, उत्तराखंड

Email : shrinetrapalji@gmail.com;
Website : anantshriprannath.com

मुद्रक :

दर्शन प्रिन्टर्स

५, रघुनाथ हिन्दी हाईस्कूल के सामने, मेम्को-बापुनगर रोड,

बापुनगर, अमदावाद

प्राणनाथ वाणी अवतरण परिचय

अनन्त सृष्टियों के अस्तित्व के जो मूल आधार है, सभी आत्माओं के जो एक मालिक है, सर्व शक्तियों के जो मूल स्त्रोत है, ऐसे प्रियतम परमात्मा ही प्राणनाथ है। हां जी, हम सभी उस सागर स्वरुप सच्चिदानन्द प्रियतम की आनंद की लहरें हैं, आत्मायें हैं। आध्यात्मिक मार्ग में इस प्रकार का परस्पर आत्मीयता का भाव केन्द्रीय है। सम्पूर्ण मानव जाति को एकात्म-भाव से, दिव्य प्रेम की तार से जोडना ही धर्म का वास्तविक उद्देश्य है।

साथियों ! संसारी खेल में प्रियतम प्राणनाथ हमें सत्य और असत्य की पहचान करा कर संसार को एक सूत्र करने हेतु ब्रह्मज्ञान लेकर पधारे हैं। इसे तारतम वाणी भी इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह दिव्य ज्ञान, मोह माया के अज्ञान रुपी अंधकार को चीर कर परम आनन्ददायी दिव्य प्रकाश की ओर ले जाने वाला है।

श्री प्राणनाथ जी (श्री जी) के श्रीमुख से अवतरित यह वाणी श्री कुलजम स्वरुप महाग्रन्थ में समाहित है, जो वर्तमान संसार को मिली हुई अनमोल आध्यात्मिक संपदा है। इसमें संसार के समस्त धर्मग्रन्थों में निहित आध्यात्मिक ज्ञान को तारतम के मोतियों की माला के रुप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें विशेष रुप से उन अनादि आध्यात्मिक प्रश्नों का जैसे कि - मैं कौन हूं ? कहां से आया हूं ? मेरा प्रियतम कौन है ? आदि का निराकरण है। श्री जी फरमाते हैं कि मनुष्य मात्र प्रियतम परमात्मा की आत्म-प्रिया है, उनकी आत्म-अंगना है। इस भाव को दृढ कर लेने से आत्मा परामात्मा के चरम क्षर का सुख ले सकती है।

तारतम ज्ञान का इस ब्रह्मांड में अवतरण सन् १६२१ ई. में हुआ, जब परब्रह्म अक्षरातीत ने अपनी दिव्य शक्तियों से आवेशित स्वरुप से श्री निजानन्द स्वामी धनी श्री देवचन्द्रजी (१५८१-१६५४) को दर्शन दिये। वही बीजरुप ज्ञान आगे चलकर श्री कुलजम स्वरुप रुपी वटवृक्ष बन गया, जो आज संसार को सुख शीतलता प्रदान कर रहा है। श्री कुलजम स्वरुप निहित ब्रह्मज्ञान का अवतरण १६५९ ई. (नौतनपुरी, जामनगर) से १६९२ ई. (पन्ना, म.प्र.) तक ३३ वर्ष के अंतराल आत्म-जागृति यात्रा

दरम्यान अलग-अलग जगह पर हुआ। इसमें कुल १८,७५८ चौपाईयां है, जो १७ रत्नरुप ग्रंथो में प्रस्तुत है। निज- आनन्द(शाश्वत सुख) के पथ पर अग्रसर आत्मखोजी के लिए तो यह सच्चिदानन्द परब्रह्म अक्षरातीत का ज्ञानमयी स्वरुप ही है।

इस वाणी में जो 'महामति' की छाप है, वह प्रियतम परब्रह्म की महानतम दिव्य शक्तियों का सामूहिक स्वरुप है। मिहिरराज ठाकुर(१६१८-१६९४ ई.) जिनका लौकिक नाम है, वे प्रियतम परब्रह्म की मेहर से महामति पद की शोभा प्राप्त करते हैं और इनके तन से परब्रह्म अक्षरातीत की लीला होने से उनकी पहचान करने वाला 'सुन्दरसाथ' समुदाय उन्हें प्राणनाथ के स्वरुप में प्रणाम करता है। जो यथार्थ में क्षर पुरुष एवं अक्षर ब्रह्म से परे अक्षरातीत परब्रह्म प्राणनाथ है।

जामनगर राज्य (गुजरात) में दीवान पद पर आसीन मिहिरराज ने अपने सद्गुरु निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्र जी (१५८१-१६५४ ई.) की प्रेरणा से भौतिक सुखों को त्याग कर आत्म जागृति अभियान का महा संकल्प लिया। बारह साल की आयु में वे अपने सद्गुरु के चरणों में आये और तारतम ज्ञान प्राप्त किया। अद्वैत प्रेम के स्वरुप की पहचान करके स्वयं सेवा, समर्पण और प्रेम की मूर्ति बन गये। आध्यात्मिकता को अपने जीवन के केन्द्र में रख कर ही उन्होंने अपना कुटुम्ब धर्म, समाज धर्म, देश धर्म और मानव धर्म निभाया। उन्होंने मानवतावादी दृष्टि से प्रत्येक मानव में निहित आत्म-चेतना को परमात्मा चेतना से जोडा। व्यक्ति, समाज, धर्म और विश्व मंच को एक आध्यात्मिक कडी से जोडा। अतः उनके समन्वयात्मक प्रयासों का और उनकी वाणी का सम्यक मूल्यांकन संकीर्ण सांप्रदायिक परिधि से बाहर हो कर ही संभव है।

इसके साथ साथ सामाजिक जीवन के महत्त्वपूर्ण व्यावहारिक प्रश्नों को भी उन्होंने सुलझाया। वे परिवर्तनकारी सामाजिक क्रान्ति में निमित्त रुप बने। धर्म के नाम पर फैले अंध-विश्वास, अस्पृश्यता, छुआ-छूत, जाति-पाति और उंच-नीच के भेदभाव, अहिंसा, विविध प्रकार के व्यसनों में लिप्तता, स्त्री-वर्ग को होने वाले

अन्याय, धार्मिक असहिष्णुता, दिखावे मात्र का धर्म पालन, कर्मकांडोंकी जडता, धार्मिक क्षेत्र में बाह्य आडंबर द्वारा शोषण आदि सामाजिक समस्याओं को सुलझाने का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने आज से ४०० वर्ष पूर्व की रुढिग्रस्त मिथ्या मर्यादाओं में जकडे हुए समाज को नवचेतना प्रदान की, जिसकी आज से सामाजिक जीवन में और भी आवश्यकता है।

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी अहिंसा आंदोलन और चरखे से क्रांति की प्रेरणा श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान से अपने बचपन में अपनी माता जी पुतलीबाई के माध्यम से प्राप्त की। ऐसे विश्व के महान मानवतावादी अनेक विचारकों पर श्री प्राणनाथ जी के ज्ञान का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

इस पुष्प में प्रस्तुत दिव्य वाणी की चौपाईयां आपको श्री प्राणनाथ जी के ज्ञान की महिमा प्रकाशित कर रही है।

साथियों ! इस तारतम वाणी के बल से ही १६७८ ई. (संवत १७३५) में हरिद्वार में महाकूंभ के पर्व पर महामति जी विजयाभिनन्द निष्कलंक बुध्द के रुप में जाहिर हए। इतना ही नहीं, मुगल सम्राट औरंगजेब के दरबार में सर्वधर्म समभाव का संदेश लेकर अपने बारह सुन्दरसाथ को भी भेजा। मुगल सम्राट को धर्म का सच्चा स्वरुप बताया और अनेक हिन्दू राजाओं को भी ज्ञान से जाग्रत किया। आखिर उन्हें मिले वीर बुन्देला छत्रसाल (१६४८-१८३१ ई.), जिन्होंने उनके संरक्षण में बुंदेलखंड में आदर्श आध्यात्मिक राज्य की स्थापना की और उसकी राजधानी पन्ना शहर (एम.पी.) को वैश्विक आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र बनाया।

साथियों ! ज्ञान और प्रेम तो बांटने से ही बढता है। अत: आज विश्व भर में करोडों लोग इस ब्रह्मज्ञान के मार्गदर्शन में स्वयं आत्मजागृति प्राप्त करके संसार को लाभान्वित करने की सेवा कर रहे हैं। श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान से प्रेरित साथी इस सद्भावना से आप तक श्री प्राणनाथ वाणी के इस पुष्प को लेकर पहुंचे है।

आपका जीवन इस पुष्प की दिव्य खुश्बू से भर जाये और आप स्वयं भी इस महक को फैलाने में जुट जायें, हम यही हार्दिक मंगल कामना करते हैं। आपके आत्मस्वरुप में कोटि-कोटिसप्रेम प्रणाम।

खोजत - खोजत सतगुरु पाईये

मनुष्य मात्र को गुरु की आवश्यकता जन्म से ही रहती है। मां बाप से लेकर शाला के शिक्षक, मित्र, परिवारजन और आध्यात्मिक गुरु आदि का हमारे सफल और सुखी जीवन में बडा ही योगदान होता है। और ज्ञान की आवश्यकतानुसार मनुष्य को गुरु बदलते भी रहना चाहिये।

शिव के अवतार माने जाने वाले दत्तात्रेय ने भी २४ गुरु किये थे। वास्तव में तो उनके लिए सम्पूर्ण सृष्टि गुरु समान ही थी। उनके मतानुसार गुरु शिष्य का मिलन कोई भौतिक, मानसिक या बौध्धिक स्तर का नहीं है। यह तो दो चेतनाओं के प्रवाह का मिलन है, जो अपने मूल स्त्रोत की ओर जाना चाहती है, जैसे दो नदियां सागर से मिलने का लक्ष्य लेकर चलती है।

परम सत्य की खोज करनेवाले सभी साधकों को यह प्रेरणा लेने योग्य है कि संसार की प्रत्येक वस्तु और जीव में गुण और अवगुण है। जिनसे शिक्षा और प्रेम मिल सकता है।

साथियों ! संसार में गुरु अनेक होते है, जो हमेशां शिक्षा देने में निमित्त बनते है। लेकिन सदगुरु, जो आध्यात्मिक यात्रा में हमारा मार्गदर्शन करते हैं, कुछ विरले ही होते हैं। वे परमेश्वर के आनंद के स्त्रोत से जुडे हुये होते हैं। इस स्त्रोत से जुड कर ही हमें सच्चा सुख मिल सकता है, जो हमसे कभी भी छीना नहीं जा सकता।

यह सच है कि आज विचित्र वेशभूषायें और अनेक प्रकार के वाह्यआडम्बरों ने वैराग्य के सच्चे मार्ग को बिगाड दिया है । जड कर्मकाण्डों को प्राधान्य देने वाले धार्मिक क्षेत्र में प्रमाणिक गुरु और सच्चे सतगुरु की खोज बडी मुश्किल हो गयी है । सब कोई अपने गुरु को सदगुरु की ही उपमा दे देता है। धार्मिक क्षेत्र में व्यक्ति पूजा ने इतना ऊंचा स्थान ले लिया है कि सब जगह मत, पंथ, संप्रदायों की खींचातानी चल रही है।

आधुनिक युग के तत्व चिन्तक कहते हैं कि आप ही आप के गुरु हैं। अंग्रेजी में Guru की यह व्याख्या भी बहुप्रचलित है - G(गुरु)- U (यु)- R(आर)- U(यु) अर्थात् अपने गुरु को अपने ही अन्दर ढूंढो। इसका तात्पर्य यही है कि सब से पहले अपने भीतरी आवाज को सुनो, उस अन्त: प्रेम को सुनो, जो अहंकार से उत्पन्न नहीं है, और जो अपने मूल स्त्रोत से प्रवाहित हो रहा है।

श्री प्राणनाथ जी भी इस बात को बड़ा महत्त्व देते हैं -

जो लों आतम ना देवे साख,
तो लों प्रबोधिये बेर दश लाख ।।

जब तक चेतना के मूल स्त्रोत से अवतरित प्रेरणा की चिंगारी का हृदय में स्वीकार नहीं होता, उसकी सच्चाई की आत्मसाक्षी नहीं मिलती, तब

तक कोई भी बाहरी उपाय(ज्ञान का उपदेश या बाहरी व्यक्ति गुरु के वचन) अर्थहीन है । लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हमें उच्चतर चेतना शक्ति या प्रेरणा के वैश्विक स्त्रोत या सदगुरु की सहायता की आवश्यकता नहीं है।

धर्मो में गुरुओं के बाह्यआडम्बर से तंग आकर आज का मानव गुरु और सतगुरु के विषय से दूर ही रहना चाहता है। आज, सतगुरु की पहचान की आवश्यकता पर ही प्रश्नचिह्न खड़ा हो गया है। विश्वास है, इस पुस्तिका को पढ कर आप अपने जीवन को एक नयी दिशा दे पायेंगे। जीवन के हर कदम पर शिक्षा देने वाले गुरुओं पर कृतज्ञता भाव व्यक्त करते हुए, अपने परम-आनंद में मिलाने वाले सदगुरु की खोज कर हम प्राप्त मनुष्य जन्म का महत्तम लाभ ले पायेंगे।

आईये, सर्व प्रथम गुरु और सदगुरु के प्राथमिक भेद को समझ लें। ब्रह्ममुनियों ने गाया है -

गुरु कंचन गुरु पारस, गुरु चन्दन परमान ।
तुम सत्गुरु दीपक भये, कियो जो आप समान ।।

अर्थात् कुछ गुरु किसी भी प्रकार के अवगुण से रहित, शुध्ध सोने जैसे होते है । लेकिन अपने संपर्क में आने वाले को अपने जैसा शुध्ध स्वर्ण रुप नहीं बना सकते है । कोई गुरु उस पारसमणि के

समान होते हैं, जो निकृष्ट से निकृष्ट जीव को भी अपने चरणों में ले कर सभी अवगुण निकाल कर ज्ञान से भरपूर होते है, और अपने संपर्क में आने वाले को अपने ज्ञान से सुगन्धित तो कर देते है, लेकिन शिष्य को काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या से मुक्त नहीं कर पाते। मूल भेद यह है कि गुरु लोग शिष्य तो बनाते ही है, लेकिन सतगुरु अपनी परमधाम की शक्ति से आत्म-तत्त्व का ज्ञान प्रदान कर दूसरों को अपने समान बना देते हैं। उनका लक्ष्य मात्र शिष्यों की संख्या बढाना नहीं होता है। ना ही वें जगह-जगह जाकर कंठी बांध कर लोगों को झूठी परम्पराओं और अपनी मायाजाल में फंसाये रखते हैं। सतगुरु का लक्ष्य तो सिर्फ आत्मा को विकसित करना होता है।

साथियों स्कन्ध पुराण, गुरु गीता में की गयी सत्गुरु की व्याख्या ध्यान देने योग्य है-

ब्रह्मानन्दम् परम सुखदम, केवलंज्ञान मूर्तिमम्।
द्वंदातीतम् गगन शदृशम्, तत्वमस्यादि लक्ष्यम॥

एकं नित्यम् विमल्मचलम्, सर्दवा साक्षी रुपम्।
भावातीतम् त्रिगुन रहितम्, सत्गुरुम् तम नमामि॥

अर्थात, "मैं ऐसे सतगुरु को प्रणाम करता हूं,

जो परब्रह्म के आनन्दमयी स्वरुप वाले हों, सर्वश्रेष्ठ आनंद देने वाले हों, दिव्य ज्ञान के स्वरुप हों, सर्व प्रकार के द्वन्द्वों से परें हों, आकाश जैसे विशाल ह्रदय वाले हों, सर्वदा निर्मल स्वरुप वाले हों, सदा एक रस और साक्षी रुप बन कर रहने वाले हों, मन के भावों से परे हों, और त्रिगुनी माया के बन्धनों से सदा मुक्त हों।

साथियों ! श्री प्राणनाथ जी के साथी परमहंस श्री जुगलदास जी अपनी "प्रेम पाती" नामक लघु पुस्तिका में बहुत सुन्दर शब्दों में यह बात समझाते हैं, जिसमें दुनिया उल्झी हुई है -

"सतगुरु और पूर्ण ब्रह्म में मकडी की तार से भी बारीक भेद है। हां, इस संसार की लीला में सतगुरु पूर्ण परब्रह्म नहीं होते हैं। लेकिन उनकी आत्मा पूर्ण ब्रह्म की निज दुलहिन होती है। उन के अन्दर प्रियतम का जोश आवेश और हुक्म विराजमान होता है। इसलिये सतगुरु तो प्रियतम से मिलने का पूर्ण प्रवेश द्वार है। सतगुरु तो इस संसार में परब्रह्म का प्रतिबिम्ब ही है। यहां, इन्हें मिले बिना परमात्मा से कोई भी नहीं मिल सकता।"

"जिस तरह घडें में भरे हुये जल में सूरज का प्रतिबिम्ब देखने से सूरज की पहचान हो जाती है, वैसे ही सतगुरु के स्वरुप में देख कर ही परमात्मा को देखा जा सकता है। उनके दिल में प्रियतम

विराजमान होते हैं और सर्व ब्रह्मात्माओं का स्वरुप भी बसा हुआ होता है। इसीलिए सत्गुरु सब तरह से बड़ाई के योग्य हैं।"

"साथियों ! जिस प्रकार दूरबीन बहुत दूर की वस्तु को अपने अति निकट दिखा देता है, वैसे ही सतगुरु क्षर-अक्षर के पार अक्षरातीत के दर्शन करा देता है। जिस तरह दर्पण के माध्यम से सूर्य की गर्मी और चन्द्रमा, की शीतलता धरती पर उतारी जा सकती है, ठीक वैसे ही इश्क पूर्ण भाव से सतगुरु के ब्रह्मज्ञान के प्रति समर्पित होने से प्रियतम प्राणनाथ का सच्चा सुख-निजानन्द लिया जा सकता है।"

"दोस्तों ! पत्थर और काष्ठ में छिपी हुई अग्नि अज्ञानी और मूर्ख को नजर नहीं आती। नाही वे इनमें से अग्नि को प्रकट करने की कला जानते हैं। लेकिन, चतुर विलक्षण व्यक्ति इनसे युक्ति पूर्वक अग्नि निकाल ही लेते है । बस इसी युक्ति से, निष्कपट भावनाशील व्यक्ति सतगुरु में से पूर्णब्रह्म को प्रकट कर लेते हैं और इसी जीवन में परमधाम का सुख पल-पल लेते रहते हैं।"

"जब तक सत्गुरु के जागतिक अस्तित्व में परब्रह्म की शक्ति की पहचान नहीं कर लेते तब तक शुध्ध सेवा की अभिव्यक्ति सपना ही रह जाता है। अत: सतगुरु की पहचान और उनके आदर्शों के प्रति

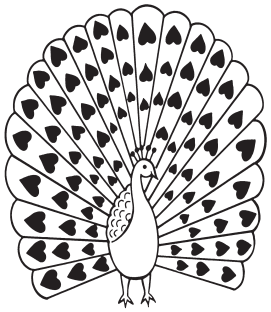

अपनी कर्तव्य-परायणता को हमारी आत्मीय स्तर की रहनी की अहम निशानी बतायी गयी है । इसलिये सर्वप्रथम तो हम मन, वचन और कर्म से सत्गुरु को परब्रह्म के रुप में ही जानें । फिर जैसे एक दुलहिन अपने मन, चित्त, बुध्धि और आत्मा से अनन्य विश्वासपूर्वक अपने प्रियतम के प्रेम भाव में डूबी रहती है, ठीक वैसे ही सत्गुरु के प्रति व्यवहार करना है।"

आत्म खोजी मित्रों ! परमात्मा सच्चिदानन्द है, जो अक्षर से परे अक्षरातीत परब्रह्म है । संसार उनके सत-अंग अक्षरब्रह्म के मन के संकल्प विकल्प से बनता मिटता है। और ऐसे तो अनेकों ब्रह्मांड पल भर में बनते मिटते हैं । हम आत्मायें उनके आनन्द अंग हैं, ठीक वैसे ही जैसे समुद्र की लहरों की अनेकों तरंगे होती है । इस संसारी खेल में आकर हम अपने निज-स्वरुप को भूल गये हैं । हम ऐसे भ्रमित हो गये है कि अपने प्रियतम से संबंध और धामलीला के सच्चे सुख नहीं ले पा रहे है। इसीलिए परब्रह्म ने स्वयं ही अपनी आनन्द स्वरुपा श्री श्यामाजी को हमें जगाने के लिए सत्गुरु के रुप में भेजा है।

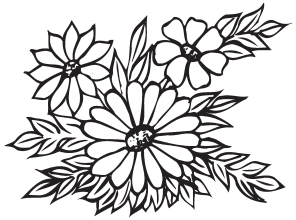

सत्गुरु की सर्वप्रथम योग्यता यह है कि उन्होंने परब्रह्म को जान लिया हो, ब्रह्म का स्वरुप समझा कर उसके पाने के सरल उपाय बताते हों,

आपके मन को अलग करके दिव्य आत्म स्वरुप की पहचान और याद दिलाते हों। जगत के खेल में रहते हुए भी उसे स्थितप्रज्ञ होकर साक्षी भाव से देखने का तरीका सिखाते हो। सदा आनंद में डूबे रहते हों। उनके मन में किसीभी प्रकारका डर या चिन्ता न हो और संसार में भी प्रियतम की लीला देख पाते हों। अपनी कृपा दृष्टि, स्पर्श और बोध से सतगुरु शिष्य के रोम-रोम में आनन्द और प्रेम की तरंगे पैदा करने वाले हो। संसारी जीवन जीते हुए भी अनन्य प्रेम सेवा समर्पण और प्रियतम की कृपा से सदगुरु यह सब कर पाते है। सदगुरु बनने या पाने के लिए ग्रहस्थी का त्याग करना आवश्यक नहीं है। भारतवर्ष के ऋषि जन भी गृहस्थ थे। निजानन्द मार्ग के संस्थापक श्री देवचन्द्र जी (१५८१-१६५४ ई.) और श्री मिहिर राज (१६१८-१६९४ ई.) दोनों ही गुहस्थ थे, जिनके तन से इस ब्रह्मांड में तारतम ज्ञान सर्व प्रथम बार अवतरित हुआ।

साथियों ! सत्गुरु ऐसे अमानव पुरुष है, जो अपनी इच्छा से मनुष्य तन धारण तो करते है, लेकिनवास्तव में वे किसीतन में सीमित नहीं रहते। उनका सच्चा स्वरुप तो उनके तन में बैठ करलीला करनेवाली चेतना शक्ति कीपहचान से दिखता है। मोह मायावश लोग सत्गुरु के स्वरुप को एक तन में ही सीमित करलेत हैं और लौकिक चमत्कारों की

कामनायें करते हैं। उनके अन्दर के दिव्य तेज का ध्यान न होने से लोग अद्वितीय प्रेम के भाव में प्रवेश नहीं करपाते हैं।

विविध परम्पराओं में वर्तमान देहधारी गुरु (या सत्गुरु) को सहायभूत बताया गया है। लेकिन अंततः तो सत्गुरु का स्वरुप ध्यान (चित्तवन) से अपने सन्मुख खडा करदेना है। निजानन्द मार्ग में तो प्रत्येक आत्मा या सुन्दरसाथ सत्गुरु का स्वरुप होता है। सभी में यह भाव ला करजियें तो जीवन परमधाम जैसा ही बन जाता है। ब्रह्मज्ञानी ही इस सत्गुरु पद को प्राप्त होते हैं। निजानन्द (प्रणामी) परम्परा में परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति श्री श्यामाजी के माध्यम से ब्रह्मवाणी अवतरित हुई है, इसीलिए उन्हें सत्गुरु बताया है। ब्रह्मवाणी श्री कुलजम स्वरुप स्वयं परब्रह्म का और श्यामा जी का ज्ञान है। इसलिए वर्तमान में यही ज्ञान हमारा मार्गदर्शन करने वाले सत्गुरु के रुप में है। अंततः तो परब्रह्म स्वयं ही सर्वश्रेष्ठ सत्गुरु हैं। क्योंकि इश्कमयी इलम और हर तरह के सुख आखिर उन्हीं के ह्रदय से ही प्रवाहित होते हैं।

आओ, श्री प्राणनाथजी की तारतम वाणी की कुछ चुनी हुई मोती रुप चौपाईयों का आत्म-मंथन करते हैं। हमें विश्वास है कि इन ब्रह्मवाक्यों का निहित भाव आप के हृदय में संचरित होगा और आत्म जागृति कीआप कीयात्रा सफलहोगी।

सत्गुरु परमात्मा का साक्षात्कार कराते हैं :

खोज बडी संसार रे तुम खोजो साधो,
खोज बडी संसार ।
खोजत खोजत सतगुरु पाईए,
सतगुरु संग करतार ।। **किरंतन २६/१**

हे सत्य के खोजियों ! संसार में परब्रह्म सच्चिदानन्द परमात्मा की खोज का बहुत अधिक महत्त्व है। खोज में लगे रहने पर ही सत्गुरु की प्राप्ति होती है । फिर सत्गुरु की संगति करने से उनकी कृपा और ज्ञान से प्रियतम परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है।

यामें सतगुर मिले तो संसे भाने,
पैंडा देखावे पार।
तब सकलसबद को अर्थ उपजे,
सब गम पडे संसार।। **किरंतन२२/७**

संसार की अज्ञान की परिस्थिति में यदि सत्गुरु मिल जाए तो वही सब प्रकार की शंकाओ का समाधान करके निराकार से परे बेहद और उससे परे सच्चिदानन्द के परमधाम की प्राप्ति का मार्ग दिखाते हैं । तब सभी धर्म ग्रन्थो के गूढ रहस्य व अभिप्राय भी स्पष्ट हो सकते हैं तथा संसार की वास्तविकता भी समझ में आ जाती है। सत्गुरु का मिलना परमात्मा की कृपा से ही संभव है । और सत्गुरु की कृपा से परमात्मा हमारी आत्मा में प्रत्यक्ष होते हैं।

कलियुग में सतगुरु का मिलना बहुत कठिन है :

सत्गुरु क्यों पाइए कुली में,
भेखें बिगारयो वैराग ।
डिंभक डाइए दुनियां ले डबोई,
बाहेर शीतल मांहें आग ।। **किरंतन २६/३**

साथियों, सावचेत रहना ! इस कलियुग में सत्गुरु की प्राप्ति बहुत कठिन है। क्योंकि सच्चे संतो के भेष में आडम्बरी लोगों ने वैराग्य को ही कलंकित कर दिया है। ब्रह्मज्ञान का प्रचार प्रसार न होने से चारों और दिखावे का ही बोलबाला है । जिससे संसार के लोग बिना पहचान के गहन अंधकार में भटक रहे हैं । ये आडम्बरी लोग उपर से देखने में ब्रह्मानन्द में डूबे हुए शान्त नजर आते हैं, किन्तु इनके हृदय में तो विषय विकारों की अग्नि जल रही होती है।

गोविंद के गुन गाए के,
ता पर मांगत दान ।
धिक धिक पडो ते मानवी,
जो बेचत है भगवान ।। **किरंतन २६/४**

ऐसे पाखंडी महात्मा लोग अपने व्यक्तिगत व पारिवारिक स्वार्थ को पूरा करने के लिए भगवान के गुण गाकर दान मांगते हैं । धिक्कार हैं, ऐसे मनुष्य को जो अपने स्वार्थ के लिए भगवान के नाम को भी बेचता है।

बैठत सतगुरु होए के,
आस करें शिष्य केरी।
सो डूबे आप शिष्यन सहित,
जाए पडे कूपअंधेरी ।। **किरंतन २६/६**

साधु महात्मा का भेष पहन कर कई लोग सत्गुरु बनकर उच्च आसनों पर बैठ जाते है। फिर शिष्यों से धन सेवा की चाहना करते हैं । ऐसे आडम्बरी लोग अपने शिष्यों सहित अंधकूप में जाकर गिरते हैं । अर्थात अज्ञान के अंधकार भें भटकतेरहते हैं।

केते आप कहावें परमेश्वर,
केते करत हैं पूजा ।
साध सेवक होए आगे बैठे,
कहें या बिन कोई नाही दूजा ।। **किरंतन ६/१०**

इनमें से कुछ ऐसे लोग भी हैं जो स्वयं को परमेश्वर कहलाते हैं । फिर कुछ लोग उनकी पूजा करतें हैं और कई साधक सेवक बनकर सबसे आगे बैठकर उनसे कथा सुनते हैं । फिर पुष्टि करते हुए कहते हैं कि हमारे परमेश्वर हैं और हमारे गुरुदेव के समान और कोईहै ही नहीं।

कोई आप बडाई अपने मुख थें,
करो सो लाख हजार।
परमेश्वर होए के आप पुजाओं,
पर पाओ नहीं भव पार ।। **किरंतन १०/५**

भले ही कोई अपने मुख से अपनी प्रशंसा हजारों - लाखों बार करले, तथा स्वयं को परमेश्वर

घोषित कर अपनी पूजा भी करवा ले, फिर भी ब्रह्मज्ञान के बिना वह भवसागर से पार नहीं हो सकता।

जाको तुम सतगुर कर सेवों,
ताको इतनी पूछो खबर।
ए संसार छोड चलेंगे आपन,
तब कहां है अपनो घर ।। **किरंतन १०/३**

अरे ! जिसको तुम सत्गुरु मानकर सेवा करतेहो, उससे जाकरइतनी सी बात पूछिये कि इस संसार को छोड़कर जायेंगे तब हमारा मूल घर कहां होगा ? अनेकों योगियों व ज्ञानी पुरुषों ने सच्चिदानन्द परब्रह्म को पिंड और ब्रह्मांड में ध्यान, कर्म, उपासना द्वारा बहुत खोजा । परन्तु बिना सत्गुरु के भला परब्रह्म का साक्षात्कार कैसे हो सकता है ? मैं कौन हूं ? मेरा मूल घर कहां है ? मैं कहाँसे बिछुडकर आया हूं ? इन अनादि प्रश्नों के बारे में विभिन्न सम्प्रदायों के गुरु और शिष्य दोनों ज्ञान चर्चा तो करते हैं, किन्तु इन मूल प्रश्नों का ज्ञान प्राप्त करनेकी बुध्धि उनमें नहीं है।

सत्गुरु की पहचान कर लो....

सतगुर सोई जो आप चिन्हावे,
माया धनी और घर।
सब चीन्ह परे आखिर की,
ज्यों भूलिए नहीं अवसर ।। **किरंतन १४/११**

सत्गुरु वही है जो आत्म स्वरुप की पहचान

करवा दे तथा माया की सूझ देकर आत्मा के धनी परमात्मा और परमधाम की पहचान करवा दे। ऐसे सतगुरु के मिलने पर उनकी कृपा से ही आत्म जाग्रति के समय की पहचान हो जाती है, जिससे अक्षरातीत धनी के प्रति दृढता हो जाती है। फिर अखंड मुक्ति को पाने का सुअवसर कोई नहीं गंवाता है।

सतगुरु सोई जो वतन बतावे,
मोह माया और आप।
पार पुरुख जो परखावे,
महामत तासों कीजे मिलाप ॥ किरंतन २०/६

सत्गुरु वही है, जो आत्मा को अखंड घर की पहचान करवा दे तथा मोह माया के बंधनों से छूटने का उपाय बता दे तथा आत्मा के निज स्वरुप व उत्तम पुरुष अक्षरातीत की पहचान करवा दे। श्री महामति जी कहते है, ऐसे सत्गुरु की संगति करनी चाहिए और उनके प्रति समर्पित हो जाना चाहिये।

सत्गुरु से संगति और सेवा समर्पण :-
अब संग किजे तिन गुरु की,
खोज के पुरख पूरन।
सेवा कीजे सब अंग सों,
मन कर करम वचन ॥ किरंतन ३४/१७

साथियों ! अब तुम उस पूर्णपुरुष अक्षरातीत का ज्ञान देने वाले समर्थ सत्गुरु की खोज करो तथा

उनकी संगति में रहो। सभी अंगो-मन, वचन व कर्म से उनकी सेवा करो व श्रध्धा पूर्वक उनके बताए हुए ज्ञान के अनुसार चलो। गुरु की आवश्यकता को पूरा करके उनके द्वारा शुरु किये गये कार्यों में पूरी तरह सहयोग देना, अपना आचरण व्यवहार ठीक रखना ही गुरु की वास्तविक सेवा है।

सो संग कैसे छोडिए,
जो सांचे है सतगुर।
उडाए सबे अंतर,
बताए दियो निज घर ॥ किरंतन ३४/१८

ऐसे सच्चे सत्गुरु की संगति कभी नहीं छोडनी चाहिए, जिसने परब्रह्म परमात्मा का ज्ञान बताकर दिल के सभी संशयों को हटा दिया हो व अखंड घर परमधाम की पहचान करवादी हो।

जो मांहें निरमल बाहेर दे न देखाई,
वाको पारब्रह्म सों पेहेचान।
महामत कहे संगत कर वाकी,
कर वाही सों गोष्ट ग्यान ॥ किरंतन ३४/१८

जो अन्दर से दिल से निर्मल हो, किन्तु उपर से किसी प्रकार का बाह्य आडम्बर नहीं दिखाते हो, उन्हें ही वास्तवमें परब्रह्म की पहचान होती है। श्री महामति जी कहते हैं कि ऐसे ब्रह्मज्ञानी की संगति करनी चाहिए और उन्हीं से ब्रह्मज्ञान की चर्चा करनी चाहिए।

महामत ए सनमंधे पाईए,
ऐसा अखंड सुख अपार ।
गुर प्रसादें नाटक पेख्या,
पाया मन मन का प्रकार ।। **कि रंतन ६/१७**

सत्‌गुरु की कृपा का फल

परब्रह्म की पंच दिव्य शक्तियों से विभूषित श्री महामति जी कहते हैं कि प्रियतम से मूल सनमंध जागृत करलेने से ही माया के इन क्षणिक सुखों से परे अखंड परमधाम का अनन्त आनन्द प्राप्त होता है। सतगुरु की कृपा से ही इस संसार रुपी नाटक को दृष्टा होकर देखा जाता है। अखंड अक्षरब्रह्म के मन का स्वरुप अव्याकृत तथा उनके स्वाप्निक स्वरुप आदिनारायण के मन एवं जीव के मन को यथार्थ रुप से जाना जाता है।

हे धामधनी ! आपने कृपा करके तारतमज्ञान से माया का स्वरुप स्पष्ट समझा दिया और शास्त्रों के वचनों से गवाही भी दी। हमने जिस माया के खेल को देखने की चाहना की थी, आपने उसकी पहचान करवा करके हमें यह खेल दिखाया।

परब्रह्मा ही अंतिम सतगुरु है :

सतगुरु मेरे श्याम जी,
मैं अहर्निश चरने रहूं ।
संबंध मेरा याहीं सो,
मैं ताथें सदा सुख लेऊं ।।

कि रंतन ५२/१२

सच्चिदानन्द परब्रह्म ही मेरे अंतिम सत्‌गुरु हैं। अब मैं हर हंमेश उनके श्री चरणों में समर्पित रहूंगी। मेरा इन्हीं से मूल संबंध है, अखंड निस्बत है। इसीलिए तो मैं निजानंद - नित्य सुख का रसास्वादन कर पा रही हूं। मुझे यह दृढ हो गया है कि ब्रह्मज्ञान और सर्व प्रकार का सुख आखिर प्रियतम परब्रह्म के हृदय से ही प्रवाहित होता है।

हे धामधणी ! हमें तो खेल देखने की रट लगी थी। उसे आपने यहां आकर हमें दृढता पूर्वक दिखाया। इसके लिए आप हमसे भी पहले इस संसार में आ गये। धनी ! आपके बिना हमारा लाड दूसरा कौन पूरा करेगा ? हमारे लिए इस मायावी संसार में आपके बिना दूसरी बात तन धारण कर कौन आयेगा ? हे धनी ! आपने हमारे उपर बहु बड़ी कृपा की है। सब मेरे हृदय में अंकित है। अब मैं आपके लिए अपने तन व जीव को न्यौंछावर कर दूंगी, आपने मूझे बहुत अधिक प्रेमानन्द प्रदान किया है। मैं आप पर बार-बार बलिहारी जाऊं। भला मैं आपके ऋण से मुक्त कैसे हो पाऊंगी।

।। इतना तो अवश्य याद रखिये ।।

- सतगुरु की संगति, कृपा और ज्ञान से प्रियतम परमात्मा का साक्षात्कार संभव है।
- संतो के भेष में आडम्बरी लोगों ने वैराग्य को ही कलंकित कर दिया है।
- स्वयं को परमेश्वर घोषित करके अपनी पूजा करवाने वाले एवं ब्रह्मज्ञान और आचरण में खाली हो, ऐसे गुरुओं से दूर रहो।
- जो अन्दर से अति निर्मल हो और बाह्य आडम्बर से मुक्त रहने वाले, उन्हें ही परब्रह्म की पहचान होती है। ऐसे ही ब्रह्मज्ञानी की संगति करनी चाहिए और उनसे ब्रह्मज्ञान की चर्चा करनी चाहिए।
- सत्गुरु वही है जो आत्मस्वरुप की पहचान करवा दे त्था माया की सुध देकर आत्मा के धनी परमात्मा और परमधाम की पहचान करवा दे।
- सत्गुरु की कृपा से ही इस संसाररुपी नाटक को दृष्टा होकर देखा जा सकता है।
- सच्चिदानंद परब्रह्म अंतिम सतगुरु हैं।